RESEARCH PAPER | POLTICAL SCIENCE | Volume : 6 | Issue : 1 | JANUARY 2016 | ISSN - 2249-555X

t|u i|jk.k 0k jktr=

KEYWORDS

PROF. DR. B.L SETHI	SMT. POOJA PUNIYA
DIRECTOR TRILOK INSTITUTE OF HIGHER STUDIES AND RESERCH HOTEL OM TOWER, CHURCH ROAD M.I JAIPUR- 302001	RESERCH SCOLAR, JJT UNIVERSITY JHUNJHUNU

जैन पुराणों में राज्यव्यवस्था का स्वरुप प्राचीन भारतीय राजनीतिक आदर्शों व सिद्धान्तों के अनुरूप है। महाभारत से लेकर कौटिल्य–अर्थशास्त्र तक राजनीतिक के जो विभिन्न सिद्धान्त निरूपित किये गये हैं, जैन पुराणों में उन्हीं सिद्धान्तों को आदर्श रूप में स्वीकार किया गया है।

jktk dk egRo

राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली में राजा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। मनुस्मृति के अनुसार सम्पूर्ण सम्प्रभूता राजा में ही निहित होती है।[1] जैसे जल के बिना नदियां, घास के बिना वन और ग्वालों के बिना गायों की शोभा नहीं होती, उसी प्रकार राजा के बिना राज्य शोभा नहीं पाता है।[2]

राजा को सत्य व धर्म का प्रर्वतक बताया गया है।[3] कौटिल्य ने भी राजा को ही राज्य माना है।[4] पद्मपुराण के अनुसार राजा ही सबकी शरण है और खासकर जो स्त्री, पुरूष, भयभीत, दरिद्री तथा दुःखी होते हैं, उनका राजा ही शरण होता है।[5] राजा को पृथ्वी पालन करने में उत्साही रहना चाहिए।[6] गुणभद्र के उत्तर पुराण में भी कहा गया है कि राजसम्पत्ति के युक्त राजा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णो का आश्रय है।[7] प्रजा की रक्षा करना राजा का मुख्य धर्म माना गया, अन्यथा प्रजा का नाश हो जाता है।[8] उत्तर पुराण में उल्लेख है कि जिस प्रकार मणियों का आकर समुद्र है, उसी प्रकार वह (राजा) गुणी मनुष्यों का आकर हैं।[9] इस तरह राज्य का आधार राजा को ही माना जाता था।

jkt/keZ

पद्मपुराण में प्रजा पालन राजधर्म के रूप में उल्लिखित है। प्रजा पालन समुचित ढ़ंग से तभी हो सकता है, जब राजा भी निर्धारित नैतिक, मानदण्डों का पालन करें, ग्रंथ में इस पहलू पर विशेष जोर दिया गया है। राजा के लिए नैतिक आदर्श पर चलना आवश्यक बताते हुए पुराणकार लिखते हैं कि जिस प्रकार पर्वत नदियों का मूल है, उसी प्रकार राजा मर्यादाओं का मूल है। यदि राजा अनाचार में स्थित रहता है, तो उसकी प्रजा भी अनाचार में प्रवृति करने लगती है।[10] एक आदर्श राजा के लिए यह जरूरी है कि वह ऐसा कोई कार्य नहीं करे जिससे कि उसकी कीर्ति मलिन हो व जिसका अनुकरण दूसरे लोग भी करने लगे।[11] राजा मधु के प्रसंग में उल्लेख है कि

वह स्वयं चरित्र से गिरा हुआ था, तभी उसकी रानी चन्द्राभा कहती है कि यदि परस्त्री सम्बन्ध में दोष है, तो हे राजन्। आप अपने आप को भी यह दण्ड क्यों नहीं देते है?[12] परस्त्रीगामियों में प्रथम तो आप ही है, फिर दूसरों को दोष क्यों दिया जाता है? क्योंकि यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है कि जैसा राजा होता है, वैसी प्रजा होती है।[13] जिससे अंकुरों की उत्पत्ति होती है, तथा जो जगत का जीवन स्वरूप है, उस जल से भी यदि अग्नि उत्पन्न होती है, तब फिर और क्या कहा जाये?[14] रविषेण लिखते हैं कि जहां राजा ही अमर्यादा का आचरण कर रहा है, वहां दूसरा कौन शरण हो सकता है।[15] आदि पुराण में राजधर्म के पांच अंग या भेद इस प्रकार बताये हैं–परिवार संरक्षण, विवेक द्वारा कार्य करना, स्वरक्षण, प्रजा रक्षा व दुष्टनिग्रह अनुग्रह (समंवसत्त)[16]।

fu'd'kZ

रविषेण कालीन भारत में आदर्श राजा को मर्यादित आचरण पर चलना आवश्यक समझा जाता था, क्योंकि राजा का आचरण प्रजा के लिए प्रतिबिम्ब होता था। इसीलिए मर्यादाओं के पालन की राजा से अपेक्षा की जाती थी।[17] राजा में समस्त मर्यादायें सुरक्षित समझी जाती थी।[18] प्रजारक्षण राजा का मुख्य दायित्व समझा जाता था, जबकि यथार्थ में राजा प्रजारक्षण को गौण मानकर स्वरक्षण को प्रमुखता दे रहे थे। रविषेण ने राजाओं की इसी प्रवृति की ओर संकेत किया है। हर्षोपरान्त गुप्तकालीन सामन्त प्रणाली ने अपने फल दिखा दिये थे।[1] सामन्त शासक स्वअस्ति.त्व के लिए नैतिक अनैतिक सभी उपायों का अवलंबन लेते थे। डॉ. दशरथ शर्मा ने इस बात की पुष्टि की है। वे लिखते है कि माडोल के वंश का संस्थापक लक्ष्मण मेवाड़ व गुजरात तक जाकर व्यापारियों को लूटता था।